❑वर्ष : 2022 ❑माह : जनवरी ❑अंक : 1 ❑दिल्ली

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन

जनसंवाद

किसान की खुशहाली की ओर एक प्रयास...

संदेश

प्रिय पाठकों,

नववर्ष 2022 की आप सभी को हार्दिक शुभकामनाएं। वर्ष 2021 काफी चुनौतियों भरा रहा। हम सबने मिलकर कॉरोना से लड़ाई लड़ी एवं वैक्सीन की मदद से लगभग जीत ही ली है। इस वर्ष हमने अपने आसपास कई बदलाव देखे। देश स्तर पर लॉकडाउन के बावजूद हमारी अर्थव्यवस्था फिर से अपने पैरों पर खड़ी हो रही है।

आपकी संस्था 'आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन' ने गत सत्रह वर्षों में आपके साथ मिलकर ज्ञान, विज्ञान एवं तकनीक की मदद से किसानों एवं पशुपालकों के जीवन में सुधार के लिए निरंतर प्रयत्नशील रही है। हमने अपने आरएंडडी सेंटर में मिट्टी, पानी, खाद्य सामग्री एवं पशु आहार की जांच कर विज्ञान की मदद से किसानों को मार्गदर्शन प्रदान करने का प्रयास किया, जिससे किसानों की आमदनी को बढ़ाया जा सके।

एआरएफ द्वारा हरियाणा एवं उत्तर प्रदेश के कई जिलों में किसान हितकारी परियोजनाएं चलाई जा रही हैं। चाहे वह किसानों को जैविक खेती के लिए प्रशिक्षित करना हो, या फिर किसान उत्पादक संघ बनाकर उन्हें बाजार से जोड़ने का कार्य हो, आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन किसानों के साथ कंधे से कंधा मिलाकर उनके उत्थान के लिए प्रयासरत है।

अभी हाल ही में हमारी धान की फसल कटी है। धान के फसल का वैज्ञानिक विधि से प्रबंधन करने के लिए एआरएफ ने वेबिनार सीरिज का भी आयोजन किया। इसके माध्यम से हमारे किसान भाइयों को धान की रोपाई से लेकर कटाई तक विशेषज्ञों का मार्गदर्शन घर बैठे प्राप्त होता रहा। फसल अवशेष प्रबंधन के क्षेत्र में एआरएफ ने किसानों को पराली न जलाने के लिए प्रोत्साहित किया। किसानों ने उन्हें विशेषज्ञों के मार्गदर्शन के अनुसार सुपर सीडर एवं पूसा डीकम्पोजर का इस्तेमाल कर गेहूं की फसल के लिए खेत को तैयार किया है। साथ ही साथ गेहूं की बोआई से पहले मृदा स्वास्थ्य की जांच करवाने के लिए भी उन्हें प्रेरित किया गया, जिससे मिट्टी की जरूरत के हिसाब से खाद का प्रयोग किया जा सके।

गौवंश के विकास एवं संवर्द्धन के लिए ए.आर.एफ. ने हरियाणा गौ-सेवा आयोग के साथ करार भी किया, जिससे गौशालाओं को वैज्ञानिक विधि से आत्मनिर्भर बनाया जा सके।

इस नए वर्ष में भी एआरएफ इसी प्रकार किसानों एवं पशुपालकों के उत्थान के लिए प्रतिबद्ध है। यह एआरएफ जनसंवाद पत्र आपके और करीब आने का एक प्रयास है जिसके माध्मय से हम अपने कार्यों के बारे में आपको अवगत करा सकें। साथ ही साथ आपके अनुभव एवं प्रयोग आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन से जुड़े अन्य सदस्यों तक पहुंचाई जा सकेगी।

मेरा ऐसा विश्वास है कि यह नया वर्ष हम सभी को आगे बढ़ने के नए अवसर प्रदान करेगा।

शुभकामनाओं के साथ, आपके सहयोग का आकांक्षी।

मोहनजी सक्सेना
मैनेजिंग ट्रस्टी

ARF Test House
For One Health

NOW NABL ACCREDITED

जांच की विशेष सुविधाएं-

Chemical-
- Animal Food & Feed
- Herbs, Spices & Condiments
- Dicalcium Phosphate
- Limestone Powder

Biological-
- Animal Food & Feed
- Herbs, Spices & Condiments
- Milk & Milk Products
- Packaged Drinking Water
- Natural Mineral Water

संपर्क करें-

7830554090

7027440556

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन ISO 9001:2015 का नवीनीकरण

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन आरएंडडी सेंटर DSIR, विज्ञान मंत्रालय और SIRO (वैज्ञानिक और औद्योगिक) के रूप में अनुसंधान करने के लिए मान्यता प्राप्त है। इस वर्ष एआरएफ ने आईएसओ 9001:2015 प्रमाण पत्र के नवीनीकरण की प्रक्रिया को सफलतापूर्वक पूर्ण किया। इससे संस्था के कार्य प्रणालियों को और मजबूती प्रदान होगी।

KVQA Certificate of Registration
(Quality Management System)
KVQA CERTIFICATION SERVICES PVT. LTD.
This is to certify that the Quality Management System of
AYURVET RESEARCH FOUNDATION
Panipat - Gohana Road NH-71A, Village: Chidana, Tehsil: Gohana, Distt. Sonepat- 131306, Haryana, India
Has been found to comply with the Quality Management System standard
ISO 9001:2015
This certificate is valid for the following areas of research and services as mentioned
Research on Food Safety, Animal Health and Nutrition, Soil and Water Health, Quality Improvement of Medicinal Plants, Hydroponics; Skill Development, Rural Development and Women Empowerment.
1st Surveillance Done On: 26/09/2020
2nd Surveillance Done On: 20/09/2021
Certificate No: KDACQ2019100227
Date of Issue: 24, October, 2019
Valid Until: 23, October, 2022*
Issued by
Authorised signatory KVQA
IAF
CB-045-QMS
*Subject to successful completion of surveillance audits

एआरएफ के वैज्ञानिक ISO 17025:2017 में प्रशिक्षित

एआरएफ आरएंडडी सेंटर के प्रमुख डॉ. अनिल कनौजिया और सहायक प्रबंधक माइक्रोबायोलॉजी श्रीमती समनविता बनर्जी ने आईएसओ 17025:2017 मेज़रमेंट अनसर्टेनिटी का प्रशिक्षण बीआईएस एनआईटीएस से प्राप्त किया ।

मिट्टी, पानी, पशु आहार एवं खाद्य पदार्थों की जांच से लाभ

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन के चिड़ाना स्थित आरएंडडी सेंटर में किसानों को लाभ पहुंचाने क उद्देश्य से कृषि एवं पशुपालन संबंधित जांच कराने की सुविधा उपलब्ध है। इसका किसान भाइयों ने अपनी फसल लगाने से पहले मिट्टी एवं पानी, पशु आहार एवं खाद्य पदार्थों की जांच करवाकर लाभ उठाया। पशुपालकों ने अपने पशुओं में थनैला रोग की जांच के लिए भी केंद्र की मदद ली। निजी उद्योगों द्वारा भी उद्योग में इस्तेमाल होने वाली कच्चे माल की जांच करवाकर लाभ उठाया।

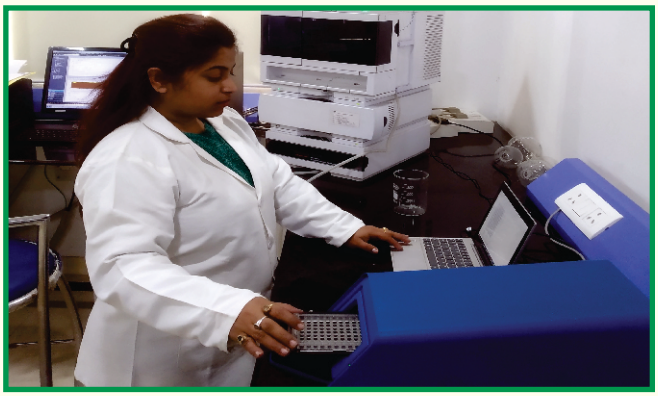

ए.आर.एफ आरएंडडी सेंटर में जांच करते वैज्ञानिक

महाराष्ट्र में किसानों का प्रशिक्षण

महाराष्ट्र में एआरएफ की सहयोगी संस्था QCS हर्बल्स प्रा. लि. की अधिकारी श्रीमती गौरा वर्मा द्वारा औषधीय पौधों की खेती हेतु सर्वेक्षण किया गया। साथ ही साथ किसानों को अश्वगंधा एवं जड़ी बूटियों की खेती विषय पर प्रशिक्षित भी किया। किसानों ने प्रशिक्षण से लाभान्वित होकर औषधीय पौधों की खेती में रुचि जाहिर की एवं अनुबंधित खेती के लिए पंजीकरण भी करवाया।

औषधीय पौधों की खेती पर प्रशिक्षण देती श्रीमती गौरा वर्मा

विश्व आयुर्वेद दिवस के अवसर पर QCS हर्बल्स द्वारा पूजा का आयोजन

2 नवम्बर 2021 को आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन द्वारा चिड़ाना (सोनीपत, हरियाणा) में विश्व आयुर्वेद दिवस बड़े उत्साहपूर्वक मनाया गया। इस शुभ अवसर पर एआरएफ द्वारा प्रोत्साहित QCS हर्बल्स प्रा. लि. के कारखाने में धन्वतंरी पूजा का आयोजन भी किया गया। इस कारखाने में किसानों को लाभ पहुंचाने के लिए किसानों से सीधे औषधीय पौधों की खरीद कर प्रसंस्करण का कार्य किया जाएगा। इस मौके पर किसानों को औषधीय पौधों की अनुबंधित खेती करने के लिए मार्गदर्शन भी किया गया।

विश्व आयुर्वेद दिवस पर धन्वंतरी पूजा का आयोजन

कृषि

सोनीपत में जैविक खेती

ए.आर.एफ. द्वारा संचालित एवं नाबार्ड पोषित जैविक खेती परियोजना जिला सोनीपत के 4 कलस्टर में 30 किसानों के साथ क्रियान्वित की जा रही है। परियोजना के अंतर्गत मृदा परीक्षण, डेरी एवं कृषि अवशेष द्वारा जैविक खाद बनाने एवं फसल में बीमारी एवं कीट प्रबंधन इत्यादि कई नवीनतम कृषि तकनीक पर कार्य किया जा रहा है।

साथ ही साथ किसानों के खेत को जैविकता प्रमाणित करवाने की दिशा में कदम उठाया जा रहा है जिससे उन्हें जैविक प्रमाण पत्र प्रदान किया जा सके। इस परियोजना का उद्देश्य मिट्टी एवं फसल की गुणवत्ता को बढ़ाना, पर्यावरण को शुद्ध करना तथा किसानों के आय में वृद्धि करना है। समय समय पर नाबार्ड, कृषि विज्ञान केंद्र, कृषि विभाग, बागवानी विभाग के अधिकारियों एवं वैज्ञानिकों द्वारा परियोजना का मूल्यांकन किया जाता है एवं किसानों को उचित मार्गदर्शन भी दिया जाता है।

किसानों ने इस परियोजना में बढ़ चढ़ कर भाग लिया है एवं कई नए किसान जैविक खेती अपनाने की ओर अग्रसर हैं।

नाबार्ड एवं कृषि विभाग के अधिकारियों द्वारा जैविक खेती परियोजना का मूल्यांकन

धान की वैज्ञानिक खेती के मार्गदर्शन हेतु 5 वेबिनार का आयोजन

धान की खेती पर पर्यावरण को नुकसान पहुंचाने के कई आरोप लगते रहते हैं जैसे अत्यधिक पानी का उपयोग, मिथेन गैस का उत्सर्जन, अत्यधिक मात्रा में रासायनिक उर्वरक एवं कीटनाशकों का प्रयोग आदि। इसी संबंध में ए.आर.एफ. ने किसानों के मार्गदर्शन हेतु एक विशेष वेबिनार श्रृंखला का आयोजन किया, जिसमें किसानों को धान की नर्सरी उत्पादन से लगाकर धान की कटाई तक उन्हें फसल प्रबंधन के सभी पहलूओं पर मार्गदर्शन प्रदान किया गया। इस वेबिनार के माध्यम से किसानों ने समय समय पर धान में लगने वाली बीमारियों पर भी विशेषज्ञों का मार्गदर्शन प्राप्त किया। इस वेबिनार श्रृंखला के मुख्य मार्गदर्शक पदमश्री डॉ. वी.पी. सिंह (पूर्व प्रधान वैज्ञानिक आईएआरआई), डॉ. टी. पी. त्रिवेदी(पूर्व ए.डी.जी., आईसीएआर), डॉ. रितेश शर्मा (प्रधान वैज्ञानिक, बासमती एक्सपोर्ट, डिवलोपमेंट फाउंडेशन, एपीईडीए) और डॉ. राजबीर गर्ग (कृषि विशेषज्ञ, केवीके, पानीपत) थे।

धान की वैज्ञानिक खेती हेतु एआरएफ वेबिनार श्रृंखला

फसल अवशेष प्रबंधन

ए.आर.एफ. द्वारा फसल अवशेष प्रबंधन के विषय पर पिछले 5 वर्षों से लगातार अभियान चलाया जा रहा है। पिछले वर्षों की भांति ए. आर. एफ. ने इस वर्ष भी सोनीपत एवं पानीपत जिलों के 40 ग्राम पंचायतों में फसल अवशेष प्रबंधन पर जागरूकता अभियान चलाया। परियोजना के अंतर्गत किसान गोष्ठी के माध्यम से किसानों को पराली न जलाने के लिए वचनबद्ध करना एवं वीडियो फिल्म के माध्यम से सुपर सीडर एवं पूसा डिकम्पोजर के इस्तेमाल के लिए प्रेरित किया गया।

इस वर्ष ए.आर.एफ. ने एक सुपर सीडर भी खरीद कर किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन एवं गेहूं की रोपाई के लिए प्रेरित किया। इस अभियान के सकारात्मक प्रभाव हमें देखने को मिलें। संबंधित गांव में इस वर्ष पराली जलाने के शायद ही कोई रिपोर्ट दर्ज हुई हो। अधिकांश किसानों ने इस वर्ष पराली नहीं जलाई।

फसल अवशेष प्रबंधन पर किसानों को वचनबद्ध करवाते पर्यावरण दूत

पराली के प्रबंधन हेतु ए. आर. एफ. के सुपर सीडर से गेहूं की बोआई करता किसान

मल्टीलेयर फार्मिंग परियोजना

ए.आर.एफ. द्वारा नाबार्ड संस्था के सहयोग से मुरादनगर (गाजियाबाद, उ.प्र.) में दिनांक 17 दिसंबर 2021 को मल्टीलेयर फार्मिंग परियोजना का शुभारंभ किया गया। इस परियोजना के अंतर्गत अगले दो वर्षों में 60 किसानों को मल्टीलेयर फार्मिंग विषय पर प्रशिक्षित किया जाएगा एवं 10 एकड़ क्षेत्र में इसका प्रदर्शन भी किया जाएगा। इस परियोजना का उद्देश्य एक कृषि क्षेत्र से एक ही समय पर 4-5 फसल लेकर किसानों की आमदनी को बढ़ाना है। इस मौके पर श्री सी.के. गौतम(डी.डी.एम., नाबार्ड गाजियाबाद), श्री एस.पी. यादव (एलडीएम लखनऊ), डॉ. अरविंद यादव (प्रमुख, कृषि विज्ञान केंद्र गाजियाबाद), किसान बंधु एवं ए.आर.एफ. के पदाधिकारी उपस्थित रहे।

मल्टीलेयर फार्मिंग का उद्घाटन समारोह

जैविक खाद प्रशिक्षण

ए.आर.एफ. द्वारा संचालित जैविक खाद का प्रदर्शन क्षेत्र चिड़ाना में स्थापित किया गया है। इस यूनिट के माध्यम से जिला सोनीपत एवं पानीपत के 1000-1500 किसानों को वार्षिक स्तर पर जैविक खाद बनाने की वैज्ञानिक विधि के विषय पर प्रशिक्षण दिया गया। यह पशु गोबर, फसल अवशेष एवं केंचुओं की सहायता से निर्मित होता है। इसके इस्तेमाल से मृदा की संरचना, नमी एवं जीवाश्म स्तर में वृद्धि होती है। साथ ही साथ गुणवत्तायुक्त उत्पादन एवं कृषि लागत में कमी आती है। इस परियोजना के माध्यम से ए.आर.एफ. ने कई एकड़ कृषि भूमि को रासायनिक उर्वरक मुक्त किया है।

जैविक खाद की निर्माण प्रक्रिया

वर्मी कम्पोस्ट पिट

"रेमी"--हरे चारे और प्राकृतिक फाइबर का शक्तिशाली स्रोत

-डॉ. दीप्ति राय

रेमी भारत के किसानों के लिए एक नयी फसल है। यह हरे चारे और प्राकृतिक फाइबर का एक शक्तिशाली स्रोत है। यह विश्व के प्राचीनतम फाइबर में से एक है। करीब 6000 वर्ष पूर्व इसके फाइबर से वस्त्र बनाये जाते थे। प्राचीन मिस्त्र में इसका विवरण ममी को लपटने वाले कपड़े के रूप में मिलता है।

इसका वानस्पतिक नाम बोहमिरिया निविया (*Boehmeria nivea L*) है और फैमिली उट्रिकेयेसी (Urticaceae) है। इसे ''ग्रास लिनन'' के या चाइना ग्रास के नाम से भी जाना जाता है। यह एक बहुवर्षीय (Perrenial crop) फसल है। भारतवर्ष में यह आसाम, बंगाल, उत्तराखंड, और महाराष्ट्र के कुछ हिस्से में उगाया जाता है।

इसकी पत्तियां गोलाकार होती हैं। इसकी नई पत्तियां कोमल और शाखायें पशुओं के चारे के लिए उपयुक्त हैं। इसे गाय, भैंस, बकरी और मुर्गियों के चारे के रूप में इस्तेमाल किया जाता है। इसकी पत्तियों में 16-18 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है। यह कैल्शियम का उच्च गुणवत्ता का स्रोत है, इसमें 30-40 ग्राम/कि.ग्रा. डाई मैटर (DM) कैल्शियम पाया जाता है एवं पोटेशियम 18-20 ग्राम/कि.ग्रा. (DM) पाया जाता है। यह 3 फीट तक लंबा शाकीय पौधा है। यह एक झाड़ी की तरह दिखाता है। बहुत से तने और शाखायें जमीन से निकले हुए प्रतीत होते हैं। इसका तना रूपांतरित तने के रूप में जमीन के नीचे होता है, जिसे राइजोम भी कहते हैं। चारे के फसल के रूप में वार्षिक 8-10 कटिंग ली जा सकती हैं और करीब 100-120 टन/एकड़ का उत्पादन मिलता है।

फूल निकलने के बाद इससे चारा नहीं लेना चाहिए, क्योंकि फाइबर की मात्रा बहुत बढ़ जाती है। इसके फाइबर को बास्ट फाइबर (BAST) भी कहते हैं।

भारतवर्ष में इसे अन्य क्षेत्रों में भी उगाना चाहिए, क्योंकि यह बहुवर्षीय है, हरे चारे के रूप में पशुओं के लिए प्रोटीन, कैशिल्यम, पोटेशियम का उत्तम स्रोत है। चारे के बाद इसका उपयोग फाइबर के लिए किया जा सकता है। इसको उगाने के लिए तना कटिंग और राइजोम कटिंग का प्रयोग होता होता है। 4 कुंतल/एकड़ तक राइजोम की आवश्यकता बोने के लिए होती है। बोने के समय मिट्टी में पर्याप्त नमी होनी चाहिए। 20-25 से.ग्रे. तापमान पर बौआई उपयुक्त है।

रेमी को सहफसल के रूप में भी बोआ जा सकता है, जैसे आम के बगीचे के बीच की जमीन पर फसल ले सकते हैं। इससे एक एकड़ से करीब 10-15 हजार की अतिरिक्त आमदनी हो सकती है।

'रेमी' की प्रवर्धन सामग्री आसाम, पश्चिम बंगाल से प्राप्त की जा सकती है। रेमी को एक बार लगाने का खर्च लगभग रुपया 15000-16000/एकड़ आता है। 'रेमी' की जीवन अवधि 8-10 वर्ष है। एक बार लगाने के पश्चात दूसरे वर्ष से ही इससे हरा चारा प्राप्त कर सकते हैं। किसान को सिर्फ हरे चारे से ही 30,000-40,000 रुपए प्रति एकड़ का हरा चारा प्राप्त हो सकता है।

अभी 'रेमी' फसल पर देश में कम काम हुआ है लेकिन इस फसल को प्रोत्साहन देने की आवश्यकता है क्योंकि यह हरे चारे के साथ साथ फाइबर भी देता है, जिसकी वस्त्र उद्योग में मांग है। किसानों, पशुपालकों के लिए यह अत्यंत लाभकारी फसल है, क्योंकि यह बहुवर्षीय चारे की फसल है, जोकि पशुओं के लिए उच्च गुणवत्तायुक्त चारा है।

रेमी पौधा

रेमी फाइबर

देशी पशु बछिया के प्रजनन और स्वास्थ्य की स्थिति का उन्नयन (कॉफ बैंक परियोजना)

ए.आर.एफ. द्वारा संचालित सोनीपत के विभिन्न ग्रामीण अंचलों में नाबार्ड द्वारा प्रायोजित परियोजना ''देशी पशु बछिया मे प्रजनन और स्वास्थ्य की स्थिति का उन्नयन'' के अंतर्गत 30 पशुपालकों के बछिया के साथ नस्ल संरक्षण, दुग्ध उत्पादन एवं पैतृक नस्लों का संरक्षण संबंधित कार्य किया जा रहा है। इस परियोजना में पशुपालकों को प्रशिक्षित कर उनके पशु की देखरेख, विकास प्रजनन, वजन, आंतरिक स्वास्थ्य से संबंधित सभी समस्याओं को ए.आर.एफ. के पशु विशेषज्ञों द्वारा कार्यान्वित किया जा रहा है। परियोजना का उद्देश्य हमारी पैतृक नस्लों को सुरक्षित करना, गुणवत्तायुक्त स्वास्थ्य एवं दुग्ध उत्पादन को बढ़ाना है।

देशी पशु बछिया के प्रजनन और स्वास्थ्य की स्थिति का उन्नयन परियोजना के अंतर्गत संचालित परियोजना

ARF का नस्ल सुधार कार्यक्रम दिखा रहा है अपना असर

किसानों द्वारा पशुओं को गर्भाधान के लिए एक जगह से दूसरी जगह ले जाना आसान नहीं होता इसलिए ARF के माध्यम से चलित इकाई द्वारा कृत्रिम गर्भाधान की सुविधा ग्रामीण क्षेत्रों के पशुपालकों को उनके घर पर ही उपलब्ध करवाई जा रही है।

किसानों को कृत्रिम गर्भाधान के लाभ में मुख्यतः गर्मी की उचित पहचान तथा श्रेष्ठ गुणवत्ता के वीर्य द्वारा सही समय पर कराए गए गर्भाधान उचित दर पर प्राप्त होते हैं। ए.आर.एफ. के मार्गदर्शन में किसानों को प्रजनन रिकॉर्ड रखने में सहायता मिलती है। कृत्रिम बिधि से गर्भधारण कराने के बाद किसानों को प्रजनन सांडों को रखने की आवश्यकता नहीं होती है। इसके लैंगिक क्रियाओं द्वारा संचरित रोगों से भी बचाव होता है। प्राकृतिक विधि की तुलना में इस विधि से गर्भधारण से नई सन्तति से अधिक उत्पादन प्राप्त किया जा सकता है। इस बिधि में संतति परीक्षण आरंभिक अवस्था में किया जाता है, इसलिए गर्भाधारण में अकारण कोई देरी नहीं होती। पिछले तीन माह (अक्टूबर-दिसंबर 2021) में लगभग 350 कृत्रिम गर्भाधान ए.आर.एफ. के द्वारा सफलतापूर्वक किया गया।

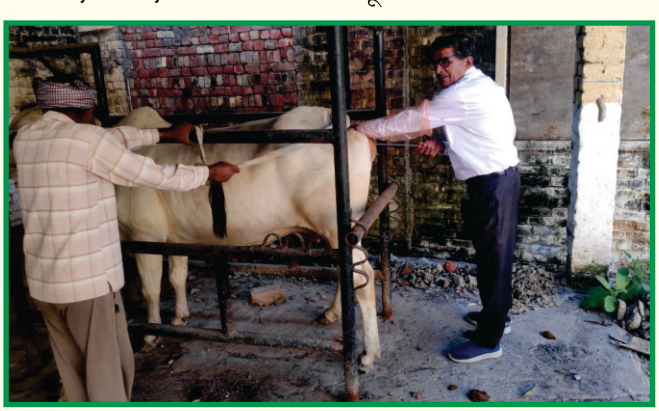

कृत्रिम गर्भाधान करते हुए ए.आर.एफ. के विशेषज्ञ

किसान उत्पादक संगठनों (एफ.पी.ओ.) द्वारा किसानों का सशक्तिकरण

नाबार्ड द्वारा वित्त पोषित किसान उत्पादक संगठनों (एफ.पी.ओ.) को आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन जिला सोनीपत, पानीपत (हरियाणा) एवं बागपत (उत्तर प्रदेश) में बढ़ावा दे रहा है। किसान उत्पादक संगठन द्वारा किसानों की आय को दुगुना करने पर कार्य किया जा रहा है जैसे

- सरकारी योजनाओं (केंद्र एवं राज्य) का सीधा लाभ दिलाना।
- किसान उत्पादक संगठनों से जुड़े किसानों को कम दाम में खेत के लिए कीटनाशक, खाद व दवाइयां उपलब्ध कराना।
- किसानों के उत्पाद को अच्छे दामों में विपणन की व्यवस्था करना।
- किसानों को फसल अवशेष प्रबंधन पर मार्गदर्शन एवं सहयोग।
- तीन किसान उत्पादक संगठनों को मंडी बाजार लाइसेंस उपलब्ध कराया, जिसके द्वारा किसान सदस्यों के उत्पाद को सरकारी दर पर खरीद कर सरकार द्वारा आवंटित की गयी एजेन्सी को सप्लाई करना।
- किसानों के उत्पाद को खरीद कर मूल्य संवर्धन करके सीधे उपभोक्ताओं को बेचा जा रहा है, जिससे किसान उत्पादक संगठनों से जुड़े किसान सदस्यों को उनके उत्पाद को उचित दाम प्राप्त हो रहा है।
- जुड़े किसानों के लिए समय समय पर प्रशिक्षण एवं भ्रमण कार्यक्रमों का आयोजन।
- किसान उत्पादक संगठन द्वारा तैयार किये गये उत्पाद जैसे सरसो तेल, जैविक धान, जैविक चावल, जैविक गेहूं, केंचुआ खाद लोकल बाजार एवं दिल्ली के क्षेत्रों में सप्लाई की ।

देशी पशु बछिया के प्रजनन और स्वास्थ्य की स्थिति का उन्नयन परियोजना के अंतर्गत संचालित परियोजना

स्वयं सहायता समूह की महिलाओं को उद्यमिता का प्रशिक्षण

ए.आर.एफ. द्वारा नाबार्ड सहायता के सहयोग से स्वयं सहायता समूह की 30 महिलाओं के लिए जैविक खेती विषय पर 15 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रम (16 नवंबर-2 दिसंबर 2021 तक) आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम के अंतर्गत जैविक खेती करने से संबंधित विषय जैसे जैविक खाद बनाना, खेतों पर रोग एवं कीट का जैविक तरीके से प्रबंधन, प्रमाणित जैविक खेती के विभिन्न आयाम इत्यादि विषयों पर विस्तार से प्रशिक्षित किया गया। प्रशिक्षण के सफल समापन पर सभी महिलाओं को प्रमाण पत्र भी दिया गया। इस कार्यक्रम में प्रशिक्षक कृषि विज्ञान केन्द्र, आई.सी.ए.आर., कृषि विभाग एवं जैविक खेती से जुड़े हुए निजी संस्थाओं से आए विशेषज्ञ थे।

इस कार्यक्रम में महिलाओं ने न सिर्फ बढ़ चढ़ कर भाग लिया, बल्कि सीखने के बाद उसका अपने खेतों पर जैविक विधि का प्रयोग भी किया। इस कार्यक्रम के प्रमाण पत्र वितरण समारोह में नाबार्ड संस्था के श्री सी.के. गौतम (डी.डी.एम., गाजियाबाद), श्री एस.पी. यादव गौतम (एल.डी.एम., लखनऊ), श्री एम.जे. सक्सेना (मैनेजिंग ट्रस्टी, ए.आर.एफ.), डॉ. अनूप कालरा (निदेशक, आयुर्वेट लिमिटेड), डॉ. संगीता गुप्ता (पूर्व कृषि वैज्ञानिक, आई.सी.ए.आर), डॉ. दीप्ति राय, श्री प्रवीण कुमार शुक्ला एवं सुश्री आभा सक्सेना उपस्थित रहे।

लघु उद्यमिता विकास कार्यक्रम के अंतर्गत गाजियाबाद में जैविक खेती प्रशिक्षण

उद्घाटन कार्यक्रम

प्रशिक्षक–डॉ. मयंक राय, प्रमुख, के.वी.के., गौतमबुद्ध नगर

प्रशिक्षक–डॉ. संगीता गुप्ता, पूर्व वैज्ञानिक, आई.सी.ए.आर.

प्रशिक्षक–डॉ. तुलसा रानी, मृदा विशेषज्ञ, के.वी.के., गाजियाबाद

प्रशिक्षक–डॉ. विपिन कुमार, कृषि वैज्ञानिक, के.वी.के., गौतमबुद्ध नगर

प्रशिक्षक–श्री कृष्ण गौपाल, कृषि विशेषज्ञ, ए.आर.एफ.

डॉ. अनूप कालरा महिलाओं का मागदर्शन करते हुए

श्री एम.जे. सक्सेना प्रतिभागी को प्रशिक्षण प्रमाण पत्र देते हुए

किसानों के लिए तीन दिवसीय पांच शैक्षिक भ्रमण कार्यक्रम सम्पन्न

नाबार्ड के क्षमता निर्माण कार्यक्रम (कैट परियोजना) के अंतर्गत आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन ने किसानों को देश के सुप्रसिद्ध कृषि एवं पशुपालन संबंधी विश्वविद्यालयों एवं संस्थाओं में शैक्षिक भ्रमण करवाया। विगत वर्षों की भांति इस वर्ष भी जिला सोनीपत, पानीपत, बागपत एवं गाजियाबाद के लगभग 125 किसानों को इस कार्यक्रम के अंतर्गत भ्रमण पर ले जाया गया। भ्रमण के दौरान किसानों का उत्साह देखने लायक था। उन्हें इस कार्यक्रम के माध्यम से देश में विभिन्न शोध संस्थाओं द्वारा नई तकनीक के बारे में जानने एवं सीखने का मौका मिला। उन्हें विशेषज्ञों द्वारा अपनी जिज्ञासाओं एवं समस्याओं का समाधान भी प्राप्त हुआ।

इन संस्थाओं में भ्रमण से किसान एवं पशुपालक आधुनिक तकनीक सीखकर इन्हें अपने फार्म पर उपयोग कर अपनी आमदनी बढ़ा रहे हैं। भ्रमण किए गए संस्थान निम्नलिखित हैं:-

1. भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, पूसा, नई दिल्ली
2. सरदार वल्लभ भाई पटेल कृषि एवं प्रौद्योगिकी वि.वि., मेरठ
3. लाला लाजपत राय पशु चिकित्सा एवं पशु विज्ञान वि.वि., हिसार
4. हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार
5. एकीकृत मधुमक्खी पालन केंद्र, कुरुक्षेत्र
6. राष्ट्रीय खुम्भ अनुसंधान केंद्र, सोलन
7. डॉ. यशवंत सिंह परमार विश्वविद्यालय, सोलन
8. आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन, सोनीपत

कैट बागपत

कैट पानीपत

कैट गाजियाबाद (प्रथम)

कैट गाजियाबाद (द्वितीय)

कैट सोनीपत

हरियाणा गौ सेवा आयोग और आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन के मध्य अनुबंध पर हुए हस्ताक्षर

गौ आधारित पदार्थ-अनुसंधान से वैज्ञानिक कसौटी पर उतरेंगे खरे

हरियाणा गौ सेवा आयोग एवं आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन, दिल्ली के मध्य 8 अक्टूबर 2021 को हरियाणा गौ सेवा आयोग के पंचकूला स्थित कार्यालय में एक अनुबंध पर हस्ताक्षर किए गए। हरियाणा गौ सेवा आयोग और आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन मिलकर गौ आधारित पदार्थों का अनुसंधान करके वैज्ञानिक कसौटी पर खरा उतारने का प्रयास करेंगे।

इस मौके पर हरियाणा गौ सेवा आयोग के चेयरमैन श्री श्रवण कुमार गर्ग व आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन, दिल्ली के प्रबंधक ट्रस्टी श्री मोहन जी सक्सेना, डॉ. ए सी वार्ष्णेय (पूर्व कुलपति), डॉ. अनूप कालरा (कार्यकारी निर्देशक, आयुर्वेट लिमिटेड), आयोग के उपाध्यक्ष श्री विद्यासागर बाघला, सचिव डॉ. चिरंतन कादयान एवं पिंजौर में स्थापित गौ अनुसंधान केंद्र के ट्रस्टी श्री नवराज धीर आदि उपस्थित रहे।

हरियाणा गौ सेवा आयोग के चेयरमैन श्रवण कुमार गर्ग ने इस मौके पर बताया कि आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन गोबर गैस, गोबर खाद, कृत्रिम गर्भाधान, ग्रामीण उत्थान, ग्रामीण रोजगार सृजन जैसे अनेकों सामाजिक उत्थान के विषयों पर पिछले कई वर्षों से कार्यरत हैं। उन्होंने बताया कि इस हस्ताक्षरित अनुबंध के दौरान गौ आधारित पदार्थों, जिनमें गाय का गोबर, गोमूत्र,

दूध आदि से बने अनेकों पदार्थों, नस्ल सुधार, कृत्रिम गर्भाधान आदि पर अनुसंधान का कार्य परस्पर सहयोग से होगा।

चेयरमैन श्रवण कुमार गर्ग ने आगे कहा कि प्रदेश के मुख्यमंत्री मनोहर लाल के मार्गदर्शन में हरियाणा गौ सेवा आयोग प्रदेश की गौशालाओं को लगातार स्वावलंबी बनाने की दिशा में कार्य कर रहा है। यह हस्ताक्षरित अनुबंध हरियाणा की गौशालाओं को स्वावलंबी बनाने में मील का पत्थर साबित होगा।

डॉ. अनूप कालरा (कार्यकारी निदेशक, आयुर्वेट लिमिटेड) ने कहा कि आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन का सदैव ही यह प्रयास रहा कि ऐसे कार्यक्रम संचालित किए जाएं, ताकि स्वस्थ पशु और खुशहाल किसान की दिशा में कदम बढ़ाया जा सके। इसी श्रृंखला में अब हरियाणा गौ सेवा आयोग और आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन मिलकर गौ आधारित पदार्थों पर अनुसंधान करके वैज्ञानिक कसौटी पर खरा उतारने का प्रयास करेंगे।

हरियाणा गौ सेवा आयोग के तकनीकी मार्गदर्शन में पिंजौर की श्री कामधेनु गौशाला सेवा सदन में स्थापित अनुसंधान केंद्र का दौरा किया। गौ अनुसंधान केंद्र में बन रही गोबर आधारित विभिन्न प्रकार की खाद, गोमूत्र के विभिन्न अर्क एवं गोबर से बनने वाले उत्पादों का निरीक्षण किया।

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन एवं लुवास के बीच हुए प्रशिक्षण एवं अनुसंधान समझौते

किसानों तक सीधे पहुंचेगा शोध का फायदा

लाला लाजपत राय पशु विज्ञान एवं चिकित्सा विश्वविद्यालय (लुवास) ने आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन के साथ प्रशिक्षण एवं अनुसंधान के क्षेत्र में समझौता पत्र पर हस्ताक्षर किए हैं।

इस एमओयू कार्यक्रम का आयोजन लुवास मानव संसाधन प्रबंधन के सभागार में किया गया। मानव संसाधन प्रबंधन निदेशिका डा. निर्मल सांगवान ने बताया कि विश्वविद्यालय एनिमल हेल्थ को ओर बेहतर करने, किसानों की विभिन्न समस्याओं का समाधान करने, फीड एवं चारा के क्षेत्र में नए तकनीकी प्रयोग, पशु पोषण, औषधीय पौधों की खेती और किसानों के लाभ के लिए विस्तार गतिविधियों आदि विभिन्न शोध कार्य किए जायेंगे जिनका सीधा फायदा किसानों तक पहुंच पाएगा।

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन, सोनीपत के एमओयू पर लुवास विस्तार शिक्षा निदेशक डॉ. डीएस दहिया आदि पदाधिकारियों ने हस्ताक्षर किए।

गौरतलब है कि यह एम.ओ.यू तीन साल तक आर्युवेट रिसर्च फाउंडेशन सोनीपत के लिए मान्य रहेगा। ये समझौता संयुक्त रूप से लुवास के स्वामित्व में होंगे।

डॉ. अनूप कालरा (कार्यकारी निदेशक, आयुर्वेट लिमिटेड) ने कहा कि इस समझौते में मुख्य जोर किसानों के प्रशिक्षण पर रहेगा। विश्वविद्यालय में विभिन्न नई टेक्नोलाजी के जो शोध कार्य हुए हैं वो सीधे फील्ड तक किसानों तक पहुंचाई जा सकेगी। इसके साथ-साथ विभिन्न मेडिसिनल प्लांट्स ओर हर्बल मेडिसिन पर भी मिलकर कार्य किया जायेगा, ताकि किसानों को एक अच्छी ओर स्वास्थ्यवर्द्धक दवाइयां पशुओं के लिए मिल सकें ओर उनके पशुओं के स्वास्थ्य में सुधार हो सके।

विश्वविद्यालय का कहना है कि इन सभी एमओयू का उद्देश्य यह है कि विश्वविद्यालय में हो रहे अनुसंधानों को सीधे किसानों तक पहुंचाया जाएं। विश्वविद्यालय का प्रयास है कि पोषण एवं पशु प्रबंधन के बारे में नई नई जानकारी देकर पशुपालकों का उत्पादन बढ़ाया जा सके, जिससे की उनकी आय में वृद्धि हो।

डॉ. अनूप कालरा (कार्यकारी निदेशक, आयुर्वेट लिमिटेड), डॉ. अनिल कनौजिया (प्रमुख, आर एंड डी, एआरएफ) और राजेंद्र मलिक इस अवसर पर उपस्थित रहे।

कामधेनु गौशाला में गौपाष्टमी महोत्सव

हरियाणा गौ-सेवा आयोग द्वारा कामधेनु गौशाला पिंजौर में आयोजित गौपाष्टमी महोत्सव में आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन ने भाग लिया। वहां पर ए.आर.एफ. के परियोजनाओं एवं उत्पादों का प्रदर्शन भी किया गया। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री मनोहर लाल खट्टर, मुख्यमंत्री, हरियाणा ने ए.आर.एफ. द्वारा चलाई जा रही गतिविधियों की जानकारी ली एवं सराहना भी की।

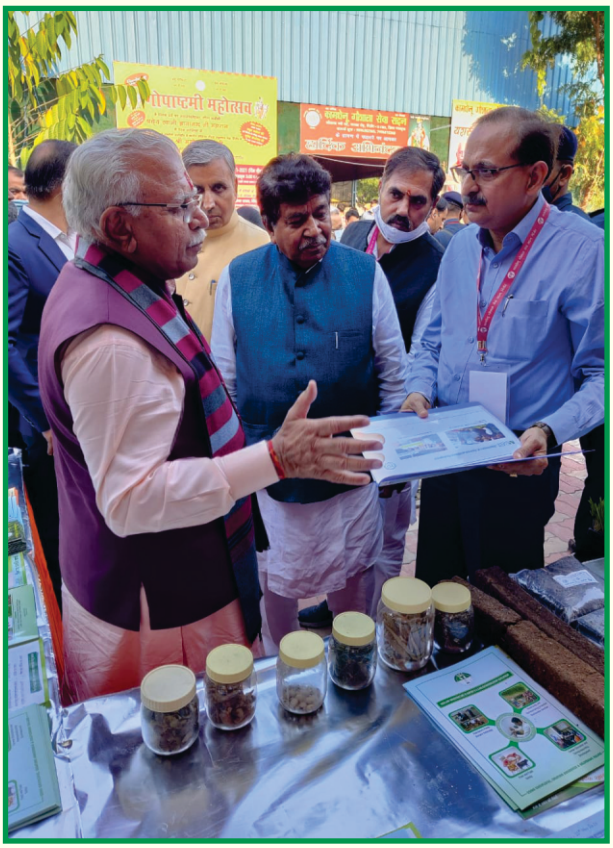

जैविक कृषि उत्पाद उपलब्ध हैं

आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन किसान उत्पादक समूहों (एफ.पी.ओ.) के साथ पिछले कई वर्षों से कार्य कर रही है। यह एफ.पी.ओ. ए.आर.एफ. के कृषि विशेषज्ञों के मार्गदशन में जैविक तरीके से खेती कर रहे हैं। यह हानिकारक रसायनमुक्त/स्वास्थ्यवर्धक खाध समूचित उत्पाद विक्रय के लिए उपलब्ध हैं:-

- **सरसों का तेल**
- **शहद**
- **देशी घी व खोया**
- **सब्जियां**
- **हल्दी**
- **गेहूं व चावल**
- **गुड़**
- **वर्मी कम्पोस्ट**

उत्पाद ऑर्डर करने के लिए संपर्क करें-
7206936802

नोटः- कुरियर सेवा का मूल्य अतिरिक्त लगेगा।

Tested and Certified

Empowering Farmers through FPOs
Formation of two new FPOs in Baghpat (U.P.)... Many more to follow.
www.ayurvetresearchfoundation.com

NABARD
Organic Farming Training
MEDP Project
Training session on Organic Farming by Dr. Sangeeta Gupta
(Retd. Agriculture Scientist, IARI, Pusa)
www.ayurvetresearchfoundation.com

GOPASTAMI MAHOTSAV CELEBRATION
Demonstration of ARF products and programs at Kamdhenu Gaushala Pinjore on the occasion of Gopastami Mahotasv. Hon'ble CM of Haryana Sh. Manohar Lal Khattar was Chief Guest of the Event.
www.ayurvetresearchfoundation.com

ARE YOU MANUFACTURER OF HERBAL PRODUCTS?
The quality of herbs determines the quality of produce and its value.
We test the herbs and the herbal products for it's quality and content.
Contact Us - +91-7027440556
www.ayurvetresearchfoundation.com

ARF SIGNED MOU WITH HARYANA GAU SEVA AAYOG
We are happy to share that ARF has signed MoU with Haryana Gau Seva Aayog. The objective of collaboration is to make gaushalas sustainable through use of science, skill and technology.

NABARD
ORGANIC FARMING TRAINING
MEDP Project
Training on Organic Farming by Dr. Tulsa Rani, Soil Scientist, KVK - Ghaziabad
www.ayurvetresearchfoundation.com

STOP CROP RESIDUE BURNING
Team ARF mobilising farmers towards preventing crop residue burning to mitigate environmental pollution.
www.ayurvetresearchfoundation.com

ARF WEBINAR SERIES
DOUBLING FARM INCOME AND RURAL ENTREPRENEURSHIP DEVELOPMENT
Azadi Ka Amrit Mahotsav
Celebrating Dr. Verghese Kurien Centenary
कुछ संस्मरण-डॉक्टर कुरियन के संग...
Late Dr. Verghese Kurien
Father of White Revolution
Eminent Guest
Dr. R.S.Sodhi
Managing Director, GCMMF (AMUL)
Eminent Guest
Dr.R.S.Khanna
International Dairy Expert
Thought Provoker
Mohan Ji Saxena
Managing Trustee, Ayurvet Research Foundation
Convener
Dr. Anup Kalra
Executive Director, Ayurvet Limited
Monday, 29th November.2021
Time: 15:30 to 16:30 Hours

ARF WEBINAR SERIES
AZADI KA AMRIT MAHOTSAV
एपीडा APEDA
TOWARDS DOUBLING FARM INCOME & DEVELOPING RURAL ENTREPRENEURSHIP
PADDY CROP HEALTH ASSESSMENT FOR BETTER YIELD AND POSTHARVEST MANAGEMENT
Padam Shri
Dr. V.P. Singh
Paddy Expert
Dr. Ritesh Sharma
Principal Scientist
Basmati Export Development Foundation APEDA
Dr. Rajbir Garg
Agriculture Scientist
KVK, Panipat
Dr. T. P. Trivedi
Former Project Director and ADG, ICAR
New Delhi
Coordinators
Dr. Deepti Rai
Principal Scientist
ARF
Jainendra Gupta
Asst. Manager(Rural Dev.)
ARF
Friday, 22nd Oct 2021
Time: 2.00-3.30 PM

Have you tested the quality of raw material used in your feed?
We help you to improve your feed quality & farm profits.
Call +91-7027440556
www.ayurvetresearchfoundation.com

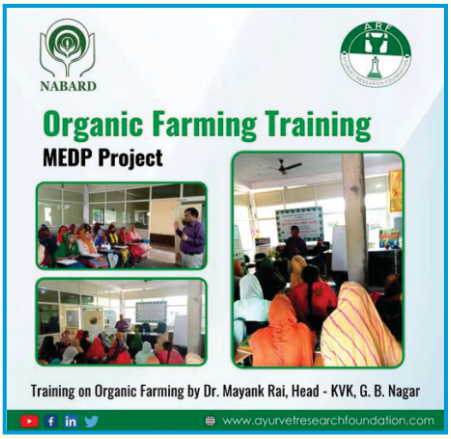
NABARD
Organic Farming Training
MEDP Project
Training on Organic Farming by Dr. Mayank Rai, Head - KVK, G. B. Nagar
www.ayurvetresearchfoundation.com

VERMICOMPOST
ARF provides training of waste management through Vermicomposting. A farmer can use his livestock's waste in making Vermicompost, which would be a good source of nutrient for his crop improving soil health and water holding capacity.
For more details call - +91 97292 88992
www.ayurvetresearchfoundation.com

प्रधान संपादक: **मोहन जी सक्सेना**, सम्पादक: **डॉ. अनूप कालरा**
संपादकीय सदस्य: **प्रवीण कुमार शुक्ला, डॉ. अनिल कनौजिया, डॉ. दीप्ति राय, गौरा वर्मा, जैनेंद्र गुप्ता** डिजाइन: **अमित बहल**
कार्यालय: आयुर्वेट रिसर्च फाउंडेशन, सागर प्लाजा, चतुर्थ तल, लक्ष्मी नगर डिस्ट्रिक सेंटर, लक्ष्मी नगर, दिल्ली-110092
दूरभाष: ईमेल: **info@arfmail.in,** वेबसाइट: **www.ayurvetresearchfoundation.com**